International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 12, December 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उ0 प्र0 में बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना

– अबधेश सिंह

लोकतन्त्र का आधार शिक्षा है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही किसी राष्ट्र के व्यक्तियों को उस देश का भावी व जिम्मेदार नागरिक बनाया जा सकता है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके आधार पर व्यक्ति या राष्ट्र को विकास की मुख्य धारा में लाने का प्रयास करता है। आज इतिहास इस बात का साक्षी है वही व्यक्ति या राष्ट्र विकसित हुआ है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर रहा है तथा उसने विभिन्न राष्ट्रों के शैक्षिक कार्यक्रमों को समझा तथा अपने में साझा किया। उदाहरण स्वरूप अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, रुस, फ्रांस इत्यादि।

मिल्टन ने कहा है– ''किसी बच्चे को सोने के चम्मच से दूध पिलाने से बेहतर है कि उसे शिक्षा दी जाए।'' इस प्रकार से शिक्षा के संदर्भ में प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में लिखा है कि ''शिक्षा ज्ञान चक्षुका ऐसा माध्यम है जो मानसिक व्याधि को दूर कर देता है।'' वही पर जे0एस0गिल0 के अनुसार '' अशिक्षितों को मत देने का अधिकार नहीं है।'' ये सभी एक व्यवहारिक ज्ञान व कौशलों का मिश्रित परिणाम है। और इस प्रकार की शिक्षा देने का कार्य शिक्षक पर ही है।

आज दिन व दिन देश काल व परिस्थितियॉ परिवर्तित होती जा रही हैं। शिक्षा को प्रभावी तथा उपयागी बनाने के लिये शिक्षण में प्रशिक्षण की आवश्यकता समझी गयी। वर्तमान समय में सरकार ने शिक्षक के लिये बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 पाठ्यक्रम मान्य किये हैं। जिनको प्राप्त करने के लिये व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करता है, और शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तर को प्राप्त करता है।

अध्यापक का व्यक्तित्व प्रत्येक काल में महत्वपूर्ण रहा है। अतः ऐसे समय में इसके उत्तरदायित्व के बारे में तथा आकांक्षा स्तर के बारे में जानना और आवश्यक हो जाता है। उपरोक्त शोध में शोधार्थी ने उ0 प्र0 के फिरोजाबाद जनपद के बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 पाठ्यक्रम के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया है।

उद्देश्यः–

1. बी0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. डी0 एल0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
3. बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पना :–

1. बी0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. डी0 एल0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि :–

प्रस्तावित शोध अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक शोध कार्य है। अतः इसमें सर्वेक्षण (वर्णनात्मक अनुसंधान) विधि का प्रयोग किया है।

प्रयुक्त उपकरण :– आकांक्षा स्तर ज्ञात करने हेतु एक प्रमापीकृत परीक्षण डॉ0 महेश भार्गव एवं प्रो0 शाह की मानकीकृत आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

न्यादर्श उ0 प्र0 के फिरोजाबाद जनपद के बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 पाठ्यक्रम के महाविद्यालयों के 200 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिकी विधि से निम्न प्रकार किया जा सकता है।

सारणी –1

क्रमांक	प्रशिक्षणार्थी	बी0 एड0	डी0 एल0 एड0	कुल योग
1.	पुरूष	50	50	100
2.	महिला	50	50	100
कुल योग		100	100	200

विश्लेषण :– आकांक्षा स्तर से प्राप्त आकडों का सारणीयन कर व्याख्या विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। मध्यमान, मानक विचलन, व टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना –1 बी0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। सम्बन्धी मध्यमान अंकों की सार्थकता सारणी

सारणी–2

क्रमांक	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– मान
1.	महिला	50	24.91	4.52	0.100
2.	पुरूष	50	24.38	4.50	

गणना से प्राप्त टी का मान 0.100, टी सारणी के 98 डी.एफ. पर 0.05 स्तर पर सार्थकता 1.95 तथा 0.01 स्तर पर 2.625 दौनों से कम है। जो नगण्य है। अतः परिकल्पना –1 सत्य सिद्व होती है। अर्थात बी0 एड0 की महिला–पुरूष

प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। या समान अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना –2 डी0 एल0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। सम्बन्धी मध्यमान अंकों की सार्थकता सारणी

सारणी–3

क्रमांक	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– मान
1.	महिला	50	26.89	4.81	0.130
2.	पुरूष	50	27.42	4.05	

गणना से प्राप्त टी का मान 0.130, टी सारणी के 98 डी.एफ. पर 0.05 स्तर पर सार्थकता 1.95 तथा 0.01 स्तर पर 2.629 दौनों से कम है। जो नगण्य है। अतः परिकल्पना –1 सत्य सिद्व होती है। अर्थात डी0 एल0 एड0 की महिला–पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। या समान अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना –3 बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 पशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। सम्बन्धी मध्यमान अंकों की सार्थकता सारणी

सारणी–4

क्रमांक	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी– मान
1.	बी0 एड0	100	24.45	3.48	0.530
2.	डी0 एल0 एड0	100	24.67	3.77	

गणना से प्राप्त टी का मान 0.530, टी सारणी के 198 डी.एफ. पर 0.05 स्तर पर सार्थकता 1.65 तथा 0.01 स्तर पर 2.345 दौनों से कम है। जो नगण्य है। अतः परिकल्पना –1 सत्य सिद्व होती है। अर्थात बी0 एड0 एवं डी0 एल0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है। या समान अन्तर पाया जाता है।

सुझाव–प्रस्तुत शोध का भविष्य इस प्रकार से विस्तार कर सकते है।

1.राज्य तथा केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड के विद्यार्थियों पर।

2. राज्य तथा केन्द्रीय उच्च माध्यमिक बोर्ड के विद्यार्थियों पर ।

3.स्नातक स्तर पर विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों पर।

4.विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के व्यक्तियों पर ।

संदर्भ सूची–

1.भटनागर, डॉ आर.पी.–शिक्षा अनुसंधन, लायल बुक डिपो, मेरठ.

2.गुप्ता,डॉ एस.पी.–आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.

3.सिंह,अरूण कुमार–मनोविज्ञान,समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.

4.शिक्षामित्र,6(1)सितम्बर–2013]RNI UPBIL/2008/28046.ISSN N0- 0976-3406.